(बाणभट्ट / हर्षकाल)

content : 1. जीवन शैली (Biography)
2. हर्षकाल और बाणभट्ट की उपयोगीता
3. हर्षकाल में बाणभट्ट द्वारा रचित कृतियाँ
4. हर्षवर्धन के जीवनकाल पर बाणभट्ट के उपयोगिताओं का असर

1. जीवन शैली (Biography of Banabhatta) :

बाणभट्ट एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि / महाकवि थें | यह एक गधकाव्यकार भी थें, जिन्होंने इस क्षेत्र में बहुत प्रसिद्धियां हासिल / प्राप्त की थी | बाणभट्ट द्वारा रचित काव्य हर्षचरित्र पुस्तक के वर्णन के अनुसार बाणभट्ट का जन्म ६०६ ई० में हुआ था एवं इनका जन्म स्थान बिहार के सारण ज़िले में स्थित धपरा को बताया गया है | यह सातवीं शताब्दी के संस्कृत गद्य के लेखक थें जो बहुत से प्रसिद्ध कवियों श्रृंखलाओं में से एक माने जाते थें | उन्होंने शास्त्रज्ञान और काव्यप्रतिभा के कारण राजसभा में स्थान, सम्मान और लोगों का स्नेह-प्रेम प्राप्त किया |

बाणभट्ट के गुरू भी थें जो उन्हें समय-समय पर अथवा जरूरत के अनुसार ज्ञान दिया करतें थें | बाणभट्ट की जीवनशैली और उनकी इस महानता के पिछे उनके गुरू का योगदान परम आदर्श साबित करता था | हर्षचरित्र पुस्तक के अनुसार बाणभट्ट के गुरू भत्सु या कहीं-कहीं भर्तृ के नाम से भी जाना जाता है | बाणभट्ट की विशिष्ट / परम आदर्श कृतियों में से एक विशिष्ट कृति कादम्बरी संस्कृत गद्य है, जिसका स्वरूप साहित्यीक विचाधाराओं का उद्गम करना है | बाणभट्ट द्वारा रचित दो प्रमुख ग्रंथ - हर्षचरितम् - राजा हर्षवर्धन का जीवन चरित्र है तो वही कादम्बरि - विश्व का पहला उपन्यास है |

बाणभट्ट का जन्म प्रितीकुटा जाँव जो की हिरण्यबाहु नदी के किनारे स्थित वात्स्यान् गोत्र में हुआ था, जो की या जिसकी वर्तमान स्थित औरंगाबाद है | इनके पिता तथा माता का नाम क्रमशः चित्रभानु तथा राजादेवी था |